हिन्दी
कक्षा 8
(द्वितीय भाषा)
(द्वितीय सत्र)

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बच्चों की इज्जत करूँगा
एवं हर एक से नम्बरपार्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

राज्य सरकारी प्रादर्शी योजना इकाईयों युक्तजत्त पुस्तक

निर्माण

भुगर्ष

गुजरात शैक्षिक संशोधन अन्तर तालिम परिषद्
गांधीनगर
<table>
<thead>
<tr>
<th>प्रतीक्षावान</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्राथमिक शिक्षा में NCF-2005 और RTE-2009 के तहत पाठ्यपुस्तक (Curriculum), पाठ्यक्रम (Syllabus), पाठ्यपुस्तकें और शिक्षा-प्रक्रिया में बदलाव लाना अनिवार्य हो गया है। यह बदलाव सुझाव: विश्वव्यंजन और शिक्षा-प्रक्रिया की हमारी समझ के बारे में है। छात्रों में सर्वनाशीता, विचाराभावना, तर्कशक्ति और पुरात्तककरण करने का कौशल विकसित हो और इसके तहत छात्रों का सर्वाधिक विकास हो रही है। पाठ्यपुस्तकों के प्रमुख उदाहरण है। इस पाठ्यपुस्तक को अवधारणा, चित्रण, उपयोग और निक्षेप जैसे सोपानों की शिक्षाविद्याओं के जरिए शिक्षा-प्रक्रिया को अध्येताकृति बनाने का प्रयास किया गया है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रीय और राष्ट्रगान का आदर करें;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अस्तुण रखें;

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें;

(ड) भारत के सभी लोगों में समारसता और समान भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उसका परिवर्तन करें;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और बन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संरक्षण करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखें;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और जीनरल तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट की और बढ़ाने का सतत प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रगति और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>इकाई</th>
<th>प्रकार</th>
<th>पृष्ठ-क्रमांक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>पत्र एवं डायरी</td>
<td>पत्र</td>
<td>01</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>कच्च को सैर</td>
<td>यात्रावृत्ति</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>मत बौद्ध इन्सान को</td>
<td>कविता</td>
<td>16</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री</td>
<td>रेखाचित्र</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>दोहे</td>
<td>दोहा</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>पुनरावर्तन 1</td>
<td>-</td>
<td>31</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>तुफानों की ओर</td>
<td>कविता</td>
<td>33</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>हार की जीत</td>
<td>कहानी</td>
<td>38</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>हैसना मन्त्र है</td>
<td>चुटकुले</td>
<td>46</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>उलझन-सुलझन</td>
<td>पहेलियाँ</td>
<td>50</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>पुनरावर्तन 2</td>
<td>-</td>
<td>55</td>
</tr>
</tbody>
</table>
पत्र एवं डायरी

दूर बसे अपने संबंधियों, मित्रों, परिवारजनों तथा कभी-कभी विभिन्न अधिकारियों को पत्र लिखने की आवश्यकता रहती है। पत्रों के द्वारा हम अपनी बात अर्थ्य सुगमता से उन तक पहुंचा सकते हैं।

यद्यपि आजकल टूर्बोफोन (telephone), ई-मेल, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि द्वारा भी यह कार्य किया जाता है, फिर भी पत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है, क्योंकि

- पत्र के द्वारा वित्तर से अपनी बात व्यक्त करी जा सकती है।
- पत्र के द्वारा विचारों को प्रेषित करना अन्य साथियों की अपेक्षा सस्ता है।
- अधिकारियों तथा अपनी बात पहुँचाने, शिकायत करने, आवेदन या प्रार्थना आदि के लिए केवल पत्रों का ही सहारा लिया जा सकता है, अन्य साथियों का नहीं।

पत्रलेखन

1. निर्मंत्रण पत्र

- जनमदिन के अवसर पर उपस्थित रहने के लिए मित्र को निर्मंत्रण पत्र।

90, बुधनगर सोसाइटी,
लिंचापुर, सूरत-394210
8 अगस्त, 2011

प्रिय मित्र स्त्रोहल,
स्प्रेंग्स मस्तान।

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि अगले रविवार को मेरा जनमदिन है। इस बार तो छुट्टी के दिन ही मेरा जनमदिन है, इसीलिए मैं अपने सभी मित्रों को बुलाना चाहता हूँ और उन सबको आज निर्मंत्रण भेज रहा हूँ।

तुम जानते ही हो कि सालगिरह का दिन कितने आनंद का दिन होता है। उस दिन हमारे कई रिश्तेदार भी यहाँ आयेंगे। बिन्न, साजिद, प्रशांत, सानिया आदि सब अवश्य आएँगे। मैं चाहता हूँ कि तुम भी उस दिन यहाँ जहर आओ। यदि तुम नहीं आओगे तो हम सबको बुरा लगेगा। हम तो उस दिन सारा समय आनंद में बिताना चाहते हैं। दिनभर भोजन, जलसा, खेल आदि होगा और रात को सिनेमा देखने भी जाएँगे। मुझे आशा है कि इस अवसर पर तुम भी जहर आओगे और मेरे उत्साह और आनंद को बढ़ाओगे।

हिंदी
तुम्हारे माता-पिता को सादर चरण-स्पर्श। छोटे भाई कमल और बहन संगीता को प्यार। तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा करहूंगा।

तुम्हारा मित्र,
साहिल शाह।

शब्दार्थ

रिश्तेदार समे-संबंधी उपस्थित हाजिर आगमन आना

2. बधाई-पत्र

• सालगिरह (जन्मदिन) पर बधाई पत्र

‘शांतिसदन’
रावपुरा, बड़ौदा
10 अगस्त, 2011

प्रिय मित्र साहिल,

संप्रेम स्मरण।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला, तो हम सब बहुत खुश हुए। हमें तुम्हारी सालगिरह का निमंत्रण भी मिला और यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई कि कल ही तुम्हारी सालगिरह है। इबार माँ कुछ दिनों से बीमार रहती है और पिताजी को तो सुभक दस बजे ही दफ्तर जाना पड़ता है। दर्शना को भी सुबह स्कूल जाना पड़ता है और वह तो है भी छोटी। इसी कारण घर का बॉझु युज़ पर ही है। अब तुम ही कहो, यह सारा बॉझू किसको सौंपकर तुमसे आ मिलूँ? मेरे दिल में तो बहुत होता है कि इस शुभ अवसर पर, उड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँ। परस्तु घर की स्थिति का विचार करके विवश हो जाता हूँ और मन करते हुए भी नहीं आ सकता।

तुम तो अब एक साल बड़े हो गए हो। इस अवसर पर में तुम्हें बधाई क्यों न दूँ? में तो चाहता हूँ कि बार-बार तुम्हारी सालगिरह आया करे और हमें खुशियाँ मनाने का मौका मिले। इस मंगल अवसर पर उपस्थित न रह सकते हुए भी मेरे दिल में तुम्हारे लिए शुभकामना है। में चाहता हूँ कि इस्तेमाल तुम्हें चिरंजीव रखे और तुम्हारा नया वर्ष शुभदायी हो।

तुम्हारा मित्र,
स्नेहल

शब्दार्थ

सालगिरह जन्मदिन दफ्तर कार्यालय मंगल शुभ विवश चेवस चिरंजीव दीर्घायु
3. आश्वासन पत्र

- खेल महाकुंभ में असफल (अच्छा प्रदर्शन नहीं करने पर) सख्ती को आश्वासन पत्र

‘मातृक्षया’
स्टेशन रोड, कानपुर, अहमदाबाद
17 नवंबर, 2011

प्रिय सख्ती जागृति,
सप्रेम समृति।

आज तुम्हारे पिताजी से फोन द्वारा पता चला कि तुम खेल महाकुंभ में चक्रवृत्त प्रतियोगिता में असफल रही हो। इस समाचार से मुझे बहुत दुःख हुआ कि तुम्हारा इस प्रतियोगिता में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। हमने तुमसे बहुत आशा लगा रखी थी कि तुम जिले में प्रथम आओगी।

प्रिय सख्ती, खेल में हमेशा जीतना ही महत्वपूर्ण नहीं होता। अब जो कुछ होनेवाला था, हो गया है। इसीलिए उसका शोक न करना चाहिए और इस असफलता से निराश भी न होना चाहिए। असफलता भी सफलता का सोपान है। सफलता उन्हीं के चरण चूमती है, जो अपने ध्येयप्राप्ति के मार्ग में ढूंढ़े रहते हैं। अब निराश या हतोत्साह होने से कोई फायदा नहीं है। मैं चाहती हूँ कि अब तुम दुःख ने उत्साह से अभ्यास करो तो अगले साल तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी और तुम अपने जिले में ही नहीं गुजरात में प्रथम आओगी। मुझे आशा है कि तुम मेरी बात मानोगी और अपने अभ्यास में मनोयोग से लग जाओगी।

तुम्हारी सख्ती,
अवनी।

4. अनुमोदन पत्र

- प्रवास में जाने की अनुमति के लिए पिता को पत्र

जीवनभारती छात्रालय,
स्टेशन रोड, दाहोद
29 सितंबर, 2011

पूज्य पिताजी,
सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला। सबकी कुशलता जानकर बड़ी खुशी हुई। आप मेरी जरा भी चिंता न करें।

हिंदी
आपको सूचित करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि हमारी कक्षा के सब विद्यार्थी अगले महीने की 17 तारीख को अजंता-एलोरा की गुफाएं देखने जानेवाले हैं। में भी उस प्रवास में सम्मिलित होना चाहता हूँ। स्कूल-बस की व्यवस्था की गई है। यह प्रवास तीन दिन का रहेगा और 800 रुपए का खर्च आएगा। इस प्रवास में बहुत से दर्शनीय स्थल देखने को मिलेगे। मेरे सभी साथी मनोज, साहिल, श्रेया, जाकिर, वाहिद, गुरमीत और डेविड भी इस प्रवास में जानेवाले हैं। में भी इस प्रवास में शामिल होना चाहता हूँ। आप पत्र द्वारा इस प्रवास के लिए मुझे अनुमोदि देने और 800 रुपए मनीआर्ड से भेजने की कृपा करें।

पूजनीया माताजी को सादर प्रणाम। सोनल को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
रमेश।

5. प्रार्थना-पत्र

● छुट्टी के लिए प्रधान अध्यापक को पत्र

dेसाई फतिया,
भावनगर
23 फरवरी, 2011

सेवा में,
श्री आचार्य महोदय,
डी. ए. सार्वजनिक विद्यालय,
भावनगर

आदरणीय गुरुजी,

सजीव निवेदन है कि मेरी बहन की शादी आगामी 27 तारीख को निरिच्छत की गई है। में उसका इकलौता भाई हूँ। हम लोगों के यहाँ शादी की कितनी धूम रहती है, इससे तो आप अनजान नहीं हैं। फलतः में ता. 24 से 28 - पाँच दिन तक विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकूँगा। पिताजी का पत्र इस प्रार्थना-पत्र के साथ भेज रहा हूँ। आशा है, आप मुझे यह अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

इसके लिए में सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।
आपका आज्ञाकारी छात्र,
मनोज पटेल
क्रमांक - 25, वर्ग - 8 अ

शब्दार्थ

इकलौता अकेला फतल: परिणामत: धूम धूमधाम अवकाश छुट्टी

पत्र एवं डायरी
6. कार्यलयी पत्र

• स्वास्थ्य अधिकारी को गंदगी के बारे में शिकायती-पत्र

ता. 20 मई, 2011

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
महानगरपालिका, बड़ीदा

मान्यता,

सर्वनाश निवेदन है कि में ‘गायत्री मुहल्ला’ में रहता हूँ। यह मुहल्ला पिछले कई दिनों से ठीक से साफ नहीं हो रहा है। आजकल शादी का मौसम है। रास्ते पर गंदगी फैली है। पास के कूडेलान (डस्टबिन) में सब जूना ढाल जाते हैं। बदबू के कारण पिछले दो दिन से तो यह हाल हो गया है कि वहाँ से आना-जाना भी मुश्किल हो गया है। अभी-अभी बालों सबसे लोग परेशान हो रहे हैं। यदि गंदगी को शीघ्र न हटाया गया तो मुहल्ले-भर में बीमारी फैल जाने का डर है।

आशा है आप शीघ्र ही उसे हटाने की व्यवस्था करेंगे।

आपका विनम्र सेवक

सुरेश भाई म. परमार
गायत्री मुहल्ला, बड़ीदा

7. व्यावसायिक पत्र

• पुस्तकें भेजने के लिए पुस्तक-विक्रेता को पत्र

ता. 10 जुलाई, 2011

सेवा में,

व्यवस्थापक,
श्री गजानन पुस्तकालय, सुभाष रोड, बलसागर

महोदय,

यदि निम्नलिखित पुस्तकों को आवश्यकता है। उन्हें आप डाक से भेजने की कृपा करें।

(1) नन्हा कोश - श्री रतिलाल नायक
(2) नालंदा विश्वास शब्द सागर - श्री नवल जी
(3) बृहद इन्ही शब्दकोश - डॉ. श्याम बहादुर चर्मा, डॉ. धरमेन्द्र शर्मा
(4) साहित्यिक मुहावरा-लोकोक्ति कोश - हरिवंशराय शर्मा

कृपया उपर्युक्त पुस्तकें उचित कमीशन काटकर शीघ्र ही ची.पी.पी. (Value Payable Post) से भेजें।

भववीर,
प्रीति शाह
शालिष्वन, एम.जी.रोड, राजकोट-360001

हिन्दी
‘डायरी’ शब्द अंग्रेजी भाषा का है। ‘डायरी’ के लिए हिंदी में ‘दैनिकिया’, ‘दैनिकी’ आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। डायरी में निजी जीवन में प्रतिदिन घटित घटनाओं का लेख-जोखा रखा जाता है। डायरी के पढ़ने से किसी व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं, कार्यों या तथ्यों को जानकारी प्राप्त होती है। डायरी में व्यक्ति घटित घटनाओं के साथ-साथ अपने मन में उठी प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति भी अंकित करता है। इसलिए उसमें वैधकता होती है। डायरी प्रतिदिन, सापार्रिच, पारिक्ष अथवा मासिक लिखी जा सकती है।

- **डायरी-लेखन की विशेषताएँ**
  - डायरी-लेखन में निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं -
  - (क) डायरी-लेखन में क्रमबद्धता हो।
  - (ख) इसमें लिखा गया विवरण संक्षिप्त, सारांशित तथा वास्तविक हो।
  - (ग) डायरी लेखन में स्थान, तिथि, घटना या तथ्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना आवश्यक है।
  - (घ) डायरी लेखन करने समय आत्मराज, टीका-टिप्पणी, बनावटीपन, काल्पनिकता, चित्रात्मकता, अनुवासन विस्तार से बचना चाहिए।

- **डायरी-लेखन के लाभ**
  - डायरी-लेखन के अनेक लाभ हैं -
  - (क) इससे जीवन में घटी घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।
  - (ख) डायरी में तथ्यों का उल्लेख रहता है, इसी कारण व्यक्ति दिनभर जो अच्छे-बुरे काम करता है, उसका उल्लेख भी रहता है। इससे श्याम: शनि: बुधाओं से बचा जा सकता है।
  - (ग) डायरी ही ऐसा दस्तावेज है जिसे पढ़कर किसी व्यक्ति के जीवन के पिछले अनुभवों तथा घटनाओं की जानकारी और वह भी संबंधित व्यक्ति के शब्दों में प्राप्त की जा सकती है।

- **डायरी-लेखन के उदाहरण**
  - (1) अपने नए विद्यालय के पहले दिन की घटनाओं को अपनी डायरी में लिखिए।

7 अगस्त, 2010, जामनगर

आज नए विद्यालय में मेरा पहला दिन था। मन में विभिन्न प्रकार के विचारों की उथल-पुथल चल रही थी तथा अनेक अनजानी आशंकाएं अनावस ही मुझे डर रही थीं। 9:00 बजे पिताजी के साथ में अपने नए विद्यालय आदर्श मंडिर में पहुँचा। प्रथम चर्चा क्रम में जाने पर उन्होंने मुझसे कुछ प्रश्न किए, जिनके उत्तर मैंने दे दिये। मेरे उत्तरों से वे संतुष्ट रहे आए। उन्होंने मुझे प्रेम के लिए निर्धारित पार्व के दिया। मन को राहत मिली। शोधी ही देर में शुल्क आदि जमा करवाने के बाद में अपनी नई क्रम में पहुँच गया। अपने नए दोस्तों, अध्यापक और आचार्य से मिलकर ऐसा नहीं लगा कि मैं नये विद्यालय में आ गया हूँ।
(2) वार्षिक परीक्षा के एक दिन पूर्व के अनुभव को अपनी डायरी में लिखिए।

5 अप्रैल 2012, राजकोट

cल वार्षिक परीक्षा का पहला दिन है। रात्रि के 1:00 बज गए हैं, परंतु नींद नहीं आ रही। कल विज्ञान और टेक्नोलॉजी विषय की परीक्षा है। यद्यपि सब तुम दुहरा लिया है, तथापि मन में अजीब-सा भय है। अचानक पिताजी मेरे कपड़े में आए। मुझे जगा हुआ देखकर डाइविंग बैठाया और बिस्तर पर लेटने को कहा, बनीं बंद कर दी। बिस्तर पर पड़े-पड़े भी नींद नहीं आ रही। पिताजी के चले जाने पर टेबल लैंप जलाया और पुस्तक के पने पुन: पलटने लगा। थोड़ी देर में थककर बिस्तर पर पुन: लेट गया और न जाने कब नींद आ गई।

अभ्यास

प्रश्न 1. निर्देशित विषय के बारे में पत्र लिखिए:

(1) आपने की हुई अपनी यात्रा/प्रवास का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

(2) बीमारी के अवकाश के लिए कक्षा-शिक्षक को पत्र लिखिए।

(3) अपने विश्लेषण को किसी समस्या के बारे में प्रश्नाधारित कर पत्र लिखिए।

प्रश्न 2. सौंपिए और लिखिए:

(1) अगर तुम भी मोबाइल फोन पर अपने मित्र को एसएमएस द्वारा बधाई संदेश भेजना है, तो क्या लिखिए?

(2) तुमने इस बार छुट्टियों में क्या-क्या किया, यह अपने मित्र को कंप्यूटर पर ई-मेल द्वारा चित्राना हो, तो क्या लिखिए?

प्रश्न 3. दिए गए प्रश्नात्मक शब्दों के आधार पर वाक्य बनाइए:

(1) अभिव्यक्त (2) प्रभावी (3) आयकर (4) प्रशासन

प्रश्न 4. डायरी के रूप में लिखिए:

(1) किसी एक पूरे दिन के अपने अनुभव का विवरण।

(2) वार्षिकोत्सव में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार मिलने का आपका अनुभव।

(3) अपने जीवन का कोई सुखद अनुभव।

स्वाभाव

प्रश्न 1. नीचे दिए गए डायरी के अंश का अपनी मातृभाषा में अनुवाद कीजिए:

आज दिनांक 10 अगस्त, 2011 रात को नींद नहीं आ रही थी। खुशी का ठिकाना न था। कब सुहाग हो जाए इसका इंतजार था। स्कूल से सैर जाने के आनंद में कल्पना करते-करते मुझे नींद आ गई। बड़े संवेदन 4:00 बजें अलार्म बजा और मम्मी की आवाज आई, “राकेश उठो, चार बज गए।” में आनंद तथा उत्साह से उठा। मन में डर भी था की मास्टरजी डॉँट नहीं। सनानारंा सेंपन करने स्कूल पहुँचा। सब साथी आ पहुँचे थे। मास्टरजी ने सबको बस में बैठाया और हम सैर के लिए निकल पड़े।
पत्र-लेखन के लिए ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बातें

- पत्र में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- पत्र में आवश्यक बातें ही लिखनी चाहिए।
- पत्र अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।
- मित्र या सखी के लिए ‘तुम’ सर्वनाम का तथा बड़ों के लिए ‘आप’ सर्वनाम का प्रयोग करना चाहिए।
- पत्र में सबसे ऊपर बाई ओर अपना पूरा पता और तारीख लिखनी चाहिए।
- बाई ओर पत्र जिसे लिखना हो उसको शिष्ट भाषा में सम्बोधन करना चाहिए। इसके बाद अभिवादन करना चाहिए।
- इसके बाद पत्र के कलेवर में मुख्य विषय को अभिव्यक्त करना चाहिए।
- पत्र समाप्त होने पर, नीचे बाई ओर पत्र लिखनेवाले का सम्बन्ध और नाम लिखना चाहिए।

संबोधन, अभिवादन आदि की तालिका

<table>
<thead>
<tr>
<th>पत्र का प्रकार</th>
<th>संबंध</th>
<th>अभिवादन संबंधी शब्द</th>
<th>पत्र की समाप्ति पर लिखी जाने वाली शब्दावली</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>व्यक्तिगत पत्र</td>
<td>पुत्र पिता को -</td>
<td>पूज्य/पूज्यीती शिष्य/गुरु</td>
<td>आपका आज्ञाकारी पुत्र</td>
</tr>
<tr>
<td>निम्न</td>
<td>पिता पुत्र को -</td>
<td>प्रिय/आयुष्मान (नाम)</td>
<td>तुम्हारा शुभांचित्ते/शुभेच्छा</td>
</tr>
<tr>
<td>माता पिता को -</td>
<td>पूज्ञा/पूज्ञीया माता को</td>
<td>प्रिय/आयुष्मान (नाम)</td>
<td>आपका आज्ञाकारी पुत्र</td>
</tr>
<tr>
<td>माता पुत्र को -</td>
<td>आदरणीय भाई</td>
<td>प्रिय/चिरंजीव (नाम)</td>
<td>तुम्हारा शुभांचित्ते/शुभेच्छा</td>
</tr>
<tr>
<td>छोटे बहे भाई को</td>
<td>आयुष्मान (नाम)</td>
<td>प्रिय (नाम)</td>
<td>तुम्हारा</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़े बहे भाई को</td>
<td>प्रिय (नाम)</td>
<td>आयुष्मान (नाम)</td>
<td>शुभांचित्ते/शुभेच्छा</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़े भाई छोटी बहन को</td>
<td>प्रिय (नाम)</td>
<td>आपका सन्तोषकांशी/सन्तोषभाजन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मित्र/मित्र को</td>
<td>प्रिय/चिरंजीव (नाम)</td>
<td>आयुष्मान (नाम)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>शिष्य-गुरु को</td>
<td>पूज्ञीय/श्रद्धेय गुरुनी</td>
<td>तुम्हारा शुभांचित्ते/शुभेच्छा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>गुरु-शिष्य को</td>
<td>चिरंजीव (नाम)</td>
<td>तुम्हारा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अधिकारी सखी/पत्नी को</td>
<td>पूज्ञीय/श्रद्धेय सखी</td>
<td>आपका सन्तोषकांशी/सन्तोषभाजन</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

| व्यावसायिक पत्र | पुस्तक विक्रेता को - बैंक मैनेजर को - व्यापारी या दुकानदार को - | महोदय, महोदय, श्रीमान प्रबंधक | भवदीय भवदीय भवदीय |
| कार्यालयी पत्र | किसी विभाग के अधिकारी को - समाचार पत्र के संपादक को - | मान्यवर, मान्यवर महोदय श्रीमान संपादक महोदय | भवदीय, निवेदक, प्रार्थी, विनीत भवदीय, निवेदक |
| प्रार्थना पत्र | प्रधानाचार्य को - किसी अधिकारी को - | श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय मान्यवर महोदय | विनीत, प्रार्थी, कृपाकांक्षी, आपका आजादीकारी शिष्य, आपकी आजादीकारिणी शिष्या, निवेदक, प्रार्थी, विनीत, निवेदिका |

| डायरी के संदर्भ में |

ध्यान रखिए,
डायरी और आत्मकथा (Autobiography) दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं, क्योंकि आत्मकथा का संबंध जीवन की समूची अनुभूतियों का व्यवस्थित विवरण होता है जबकि डायरी में दैनिक जीवन में घटनेवाली पटनाओं तथा तथ्यों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होती है।

- अपने पुस्तकालय से विभिन्न प्रकार के पत्र व डायरी से संबंधित पुस्तकें पढ़ें।
- बड़ों से पूछकर पत्र करें क हम जो पत्र लिखते हैं, वे दूसरों तक कैसे पहुँचते हैं? कौन ले जाता है, हम तक कौन पहुँचाता है, पत्र कहाँ इकट्ठे होते हैं?
- आजकल पत्र किस-किस माध्यम से एक दूसरे तक जाते हैं?
- जिस क्षेत्र में आप रहते हैं, वहाँ का पिन (पोस्टल इंडेक्स नंबर) कोड क्या है?
- आपके घर डाक देने कौन आता है?
- उनसे मिलकर कोई पाँच प्रश्न पूछिए। प्रश्न और उनके उत्तर लिखिए।

हिंदी
<p>| | |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>(1)</td>
<td>(2)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>(3)</td>
<td>(4)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>(5)</td>
<td>(6)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>(7)</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

- प्रकल्प कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) : विविध डाक टिकटों का संकलन कीजिए।
कच्च निवासी हरेश धोलकिया अध्यापक थे। शिशकल्व आपकी पहचान बन गई है। पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अन्नुल कलाम के बहुव्यक्त ‘Wings of Fire’ पुस्तक का आपने गुजराती भाषा में अनुवाद ‘अगनपंख’ शीर्षक से किया है। शिक्षणकार्य के आपके अनुभव, संशोधनात्मक लेखन कार्य तथा पत्रकारिता आपके लेखन के क्षेत्र हैं। ‘कच्चमित्र’ में आप ‘सुरीखब’ स्तंभ अंतर्गत लिखते हैं। आपका सर्जनकार्य ‘अंगदनो पण’, ‘चार सोटा टका आंनद’ तथा शिक्षणसंबंधी गुजराती साहित्य लोकप्रिय है।

प्रस्तुत इकाई में आपने कच्छ का परिचय कराने का प्रयास किया है। जिसमें कच्छ एवं इर्द-गिर्द के दर्शनीय स्थानों का परिचय कराया है।

इस इकाई में अपनी संस्कृति का आदर, अपनी विरासत का संरक्षण, देशप्रेम आदि मूल्यों को विकसित किया गया है। यहाँ आपकी रचना ‘कच्चमित्र’ का भावानुवाद प्रस्तुत है।

विशाल भारत में अनेक दर्शनीय प्रांत हैं। सब का अपना महत्त्व एवं सौंदर्य है। गुजरात उनमें से एक अनुत्तर राज्य है। गुजरात का एक विशिष्ट जिला है ‘कच्छ’. जो गुजरात का अत्यंत रमणीय प्रदेश है। यात्रियों के लिए कच्छ आकर्षण का केन्द्र है। इसका पौराणिक महत्त्व भी कम नहीं। अनेक दर्शनीय स्थानों के वैविध्य के कारण इसे ‘मुजिस्म’ (संग्रहालय) कह सकते हैं।

हिंदी
कंच में प्रवेश करते ही हमें रेगिस्तान के दो भाग देखने को मिलते हैं - एक छोटा रेगिस्तान और दूसरा बड़ा रेगिस्तान। इन दोनों में रेगिस्तान जैसा कोई लक्षण नहीं दिखाई देता। रेत कहीं नज़र नहीं आती, अतः यह अनूठा रेगिस्तान है।

सामीख्याली को हम कंच का प्रवेशद्वार कह सकते हैं, कंच की यात्रा यहाँ से आरंभ होती है। यहाँ से उत्तर दिशा की ओर यात्रा का प्रारंभ होता है। रासायन से धातुबंदी पहुँचते ही हमारी प्राचीन संस्कृति मोटे-जो-दड़ो का समर्पण हो जाता है। यह स्थान 5000 वर्ष के अवशेषों का अंग है। इस प्राचीन नगर के दर्शन से ही हम चकित रह जाते हैं। हमें प्राचीनता में आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

सामीख्याली से पश्चिम की यात्रा करते भवानी नज़र आता है, जो बड़ा गाँव है जैसे नगर। यहाँ से गांधीधाम और गांधीमूर्ति कारखानों का शहर है, जहाँ सिंधु प्रजा पाकिस्तान से आकर स्थायी हुई है। गांधीधाम, आदीपुर तथा गोपालपुरी उद्योगों के कारण विकसित हुए दिखाई देते हैं। आदीपुर में गांधीमूर्ति तथा पास ही कंडला बंदरगाह का बड़ा महत्व है। कंडला का विकास यहाँ की प्रजा के लिए महत्वपूर्ण है।

कंडला से दक्षिण की ओर भद्रेश्वर अति प्राचीन जैन-यात्राधाम है। संगमरमर से बना 2500 वर्ष पुराना जिनालय भूकंप में खड़ा हुआ, उसके पुनःनिर्माण का कार्य जोरों से चल रहा है। इसे आधुनिकता का स्पर्श मिला है। मुद्रा शहर तहसील मुख्यालय भी है। यहाँ अनेक उद्योगों के कारण विकास की दिशा खुली है। समुद्र के किनारे बंदरगाह विकसित हुआ है। यहाँ कुछ प्राचीन हुआ है। समुद्र के किनारे तटीय यात्रा करते हुए हम मांडवी पहुँचे। मांडवी अति सुंदर बंदरगाह है। बड़ा प्राचीन नगर है। यह शहर राजा के महल, पवनचक्रिया तथा समुद्रतट के कारण अधिक दर्शनीय बना है। यहाँ बी.आर.टी.आई. ग्राम रंग संस्था है, बहतर जिनालय हैं, पास ही बीड़ा गाँव में आंतरराष्ट्रीय अस्पताल है। मांडवी से आगे चलते हुमरा, कोठीरा, सुपरी और खड़ो महत्वपूर्ण गाँव हैं। जैनों का प्राधान्य यहाँ नज़र आता है। नलिया शहर तहसील का केन्द्र है। यहाँ वायु सेना का मुख्य अड्डा है।

कंच की सेव
नारायण सरोवर से आगे की यात्रा करने के बाद 'नारायण सरोवर' - अति प्राचीन, पौराणिक, धार्मिक स्थान आता है। इस स्थान को रामायण काल का माना जाता है। यहाँ कोटेश्वर नामक दर्शनीय मंदिर है, जहाँ से रावण गुज़ा था, यह पूरे भारत का प्राचीन स्थान माना जाता है। सूर्यदेव और सूर्यास्त दर्शन यहाँ का बड़ा आकर्षण है।

नारायण सरोवर से आगे की यात्रा में 'लखपत' आता है जो अति प्राचीन स्थल है। गुरु नानक की चरणार्जुन से पावन इस भूमि पर गुरुढ़ारा है। एक समय का समृद्ध शहर आज जीर्णवस्था में होते हुए भी दर्शनीय है। यहाँ एक किला है, उसके बगल में पानेंगे खनिज संपत्ति के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही विश्व निर्माण का यह केन्द्र है।

लखपत से मध्य कच्छ की ओर बढ़ने पर हाजीपीर-मुसलमानों के लिए श्रद्धा का केन्द्र आता है। यहाँ पीर की मसाज रहित है। रंगिस्तान की झाँकी यहाँ से होती है। रास्ते में 'माता का मठ' नामक धार्मिक स्थान है। जहाँ नवरात्रि के पर्यंत पर लोग पदयात्रा करते हुए श्रद्धा भाव से दर्शनार्थ आते हैं। आगे भूखारण प्राकृतिक नज़ारों का केन्द्र बना है। रास्ते में चश्श, पुरावर मंदिर, बांधाय जैसे मनोहारी प्राचीन स्थान हैं।

अब कच्छ का मुख्य केन्द्र भुज आते ही उसके वैभव का परिचय होता है। आयना महल, प्राणमहल, टावर, स्वामिनारायण मंदिर, हिलगार्डन, हमीरसर तालाब, भूजिया पहाड़, लोक संग्रहालय, विश्व विभाग आदि के दर्शन करके हम आनंद ले सकते हैं। सन 2001 के भूचाल ने इसे ख़बित किया, तो लोगों ने उसे नए स्वरूप में पुन: निर्माण करके और सुंदर शहर बना दिया है।

हिंदी
भुज से उत्तर दिशा की ओर खाड़ी में ‘काला दुंगर’ है। पहाड़ पर चढ़कर रेगिस्तान की झाँकी करता एक अनौठा अनुभव है। सरकार एवं स्थानीय जनता द्वारा ‘रणोत्सव’ का आयोजन होता है। देशभर से लोग यहाँ आते हैं। सफेद रेगिस्तान को देखना एक आनंददायी घटना है।

भुज से अंधाबोधिनी भी जाना जाता है। अगे बढ़ते हुए ‘सूरजन’ संस्था में यहाँ की प्रजा की हस्तक्षेप का परिचय होता है। जेलसल-तेलसल की स्मृति में मंदिर बना है जो ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ से आदीपुर तथा गाँधीभाज जा सकते हैं। ‘सूरजबाबू’ नामक स्थान से हमारी कच्च यात्रा पूर्ण होती है, जो अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ जाती है।

कहा जाता है ‘कच्च नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा!’ कच्च गुज़रात का गोरख है और दुनिया भर के लोगों के लिए किसी भी मौसम में दर्शनीय एवं आकर्षण का केन्द्र है।

अनुवादक : महेशभाई उपाध्याय

शब्दांश

अनुठा अनोखा, विशिष्ट रेगिस्तान मर्मभूमि जीरोडार पुनःनिर्माण मज़ार दरगाह गुरुद्वारा सिखों का धार्मिक स्थल भूचाल भूकंप

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुद्दों के संदर्भ में चार-पाँच वाक्य बोलिए:

1. मर्मभूमि / रेगिस्तान
2. कच्च के तीन बड़े शहर
3. कच्च में स्थित धार्मिक स्थल
4. कच्च के ऐतिहासिक स्थल

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. आप अपनी पाठशाला में से किसी यात्रा पर गए हों, तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. आपने की हुई किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रश्न 3. दिए गए शब्द मिलें ऐसी पहेलियों का निर्माण कीजिए:

1. सितारा 2. हाथी 3. चिराग 4. पाठशाला
प्रश्न 1. दिए गए शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए:
अभ्यास, विनय, संध्या, प्रगति, अभिवादन,
mहकना, संग्राम, शायर, हमदर्द, चिराग

प्रश्न 2. इस पाठ में आए प्रशासकीय शब्दों की सूची बनाकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए विशेषणों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:
दयालु, मूल्यवान, कृपा, शोधा-सा, अच्छा, सुंदर, प्रिय

प्रश्न 4. दिए गए परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए:

विश्व नदी की पत्तियाँ आजादी नूतन कितेय नाम रखा है, संघाटनों में चंगी होने के लिए चाहिए नहीं। ये लोगों का जीवन बदल दिया रहा है, बुद्धिस्तों ने अपने आपको जगत का भागीदार बनाने वाले फलों में आनंद लिया रहा है। तथागत आत्मा के निर्माण के लिए, भारत सबसे चहत बना शातिर अनुभववा दायित्व।

प्रश्न 5. अपूर्ण कहानी पूर्ण कीजिए:

एक गाँव था। उस गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उनके दो बेटे थे, बड़े का नाम रामू और छोटे का नाम...

योग्यता विस्तार

- कच्च के बारे में अधिक जानकारी दीजिए।
- कच्च के दर्शनीय स्थलों के विचार इकट्ठे कीजिए।
- कच्च की यात्रा का आयोजन कीजिए। जिसमें साथ में ले जाने की चीजों तथा यात्रा के स्थानों का 
  क्रम बनाकर यात्रा का नक्शा, रूपरेखा तैयार कीजिए।
- अपने निजी के दर्शनीय स्थलों के विचार तथा उनकी विशेषताओं का प्रकल्प कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) करवाइए ।
मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने बॉट लिया भगवान को।
धरती बॉटी सागर बॉटा
मत बॉटो इंसान को।

अभी राह तो शुरू हुई है
मंजिल बैटी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी
हर दीपक मजबूर है।

मिला न सुरज का संदेश
हर घाटी-मेदान को।
धरती बॉटी सागर बॉटा
मत बॉटो इंसान को।

अब भी हरी-भरी धरती है
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूरा
जलता रेगिस्तान है।
अभी प्यार का जल देना है
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बांटी सागर बाँटा
मत बांटो इंसान को॥

साथ उठें सब तो पहरा हो
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँधन का हक हो
खिलती हुई बहार पर॥

रौंद न पाएगा फिर कोई
मौसम की मुसकान को।
धरती बांटी सागर बाँटा
मत बांटो इंसान को॥

- विनय महाजन

शब्दार्थ

राह रास्ता, मार्ग उजाला उजाला, रोशनी बंदी कैदी, गुलाम वितान विस्तार, अवकाश चट्टान शिलाखंड, बड़ा पत्थर पहरा सुरक्षा, रखवाली रौंदना कुचलना मंजिल लक्ष्य, गंतव्य स्थान मजबूर विवश, असहाय रेगिस्तान महस्तम बाँटना विभाजित करना घाटी दो पहाड़ों के बीच का समतल स्थान बहार सुखद जातावरण, शोभा, बसंत

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) इंसान को बांटने का क्या अर्थ है?
(2) लोगों ने भगवान को किस प्रकार बाँट लिया है?
(3) चट्टानों को प्यास कैसे बुझाई जा सकती है?

प्रश्न 2. इस काव्य को आरोह-अवरोह के साथ गाइए तथा समृहगान कीजिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यपंक्ति का भावार्थ बताइए :

अभी राह तो शुरू हुई है मंजिल बैठी दूर है।
उजाला महलों में बंदी हर दीपक मजबूर है॥
प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
(1) कविता के अनुसार अब तक किन चीजों का बैंटवारा हो चुका है?
(2) किसकी मुस्कान को कोई रोंद नहीं पाएगा?
(3) हरी-भरी धरती को कौन-सी परिस्थितियाँ रेगिस्तान में बदल सकती है?
(4) उजाले को बंदी बनाने का क्या अर्थ है?
(5) यह कविता हमें क्या संदेश देती है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :
प्यासी, औंगन, सागर, इंसान, वितान, ऊपर, रेगिस्तान, मंजिल, घाटी, गिरजाघर, मुस्कान, चट्टान, उदास, बंदी

प्रश्न 3. आज के इस आधुनिक परिवेश में संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है।
एकल परिवार के पक्ष-विपक्ष पर कक्ष में चर्चा कीजिए।

प्रश्न 4. अपूर्ण काव्य को पूर्ण कीजिए :
रात होने पर में निकलता
सबको देता हूँ शीतलता।

• प्रकल्प (परियोजना) कार्य (Project Work)
राष्ट्रीय एकता के गीतों का संग्रह कीजिए।
• भारत के मानचित्र में निम्नलिखित स्थल खोजिए और उनके विषय में सचित्र जानकारी एकत्र कीजिए।
जामा मस्जिद - स्वर्ण मंदिर - तिरुपति बालाजी मंदिर - उदवाड़ा - माउन्ट मेरी चर्च, मुंबई
• कक्ष-7 का काव्य ‘हिन्दु देश के निवासी’ का अभिनय सहित गान करवाए।
शास्त्री जी के नाम के साथ ‘कर्मयोगी’ विशेषता जोड़ना बिलकुल उपयुक्त है, क्योंकि मुझे तो उनका सारा जीवन ही कर्म से भरा हुआ मालूम पड़ता है। शास्त्री जी सामाजिक परिवार से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के जिस महत्वपूर्ण पद के तक पहुँचे, उसका रहस्य उनके कर्मयोगी होने में ही छिपा हुआ है। वे उन लोगों में भी नहीं थे, जो भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहते हैं और अचानक कभी सफलता मिल जाती है बल्कि वे उन लोगों में से थे, जिनकी अपनी हरेली की लकीरों के बजाय अपने चिंतन और कर्म को शक्ति पर अधिक भरोसा होता है और वे क्रमशः अपने जीवन का रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं। शास्त्री जी के लिए कर्म ही ईश्वर था और इसके प्रति विश्वास किसी फल को आशा किए संपूर्ण भाव से समर्पित रहते थे। यहाँ तक कि जब भी उन्हें फल की प्राप्ति के अवसर मिले, तब भी उन्होंने उस ओर हमेशा उपेक्षित दृष्टि ही रखी। उनका जीवन-दर्शन ‘गीता’ के निष्काम कर्मयोगी का प्रतिरूप था। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन्हें केवल कर्मयोगी के बजाय ‘निष्काम कर्मयोगी’ कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।
अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ आत्मा, उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्म का भाव तथा उस कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण - ये तीन बातें - मुझे उनके संपूर्ण चरित्र तथा जीवन-दर्शन में दिखाई पड़ती हैं। अपने एक भाषण में उन्होंने इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा था, “यहाँ तक कि भले ही आप राजनीतिक क्षेत्र या सामाजिक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करते हैं, यदि आप उसमें सफल होना चाहते हैं, अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करना चाहते हैं, तो आपके कार्य और समर्पण तथा भक्ति और कर्म में समन्वय होना चाहिए।”

में शास्त्री जी की सफलता का रहस्य उनके इसी महत्त्वपूर्ण चिंतन में मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास का रहस्य इसी भक्ति और कर्म के सिद्धांत में निहित है।

शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुभु उदाहरण है। उनके ये गुण केवल उनके कार्यों और विचारों में ही अभिव्यक्ति नहीं पाते थे, बल्कि उनको देखने से ही इन सभी भावों का एहसास हो जाता था। उनके अपने व्यक्तित्व में विचारों का अनोखा समृद्धि था। वे जो कुछ कहते थे, वही करते थे। जो कुछ भी करते थे, वह एकमात्र राष्ट्र-लाभ की भावना से प्रेरित होकर करते थे। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र का एक बहुत बड़ा विशेषता थी, जिसके कारण देशवासी उन पर इतना अधिक विश्वास करते थे और उन्हें चाहते भी थे। पंडित नेहरू की समृद्ध राजनीतिक विरासत को संभालना और उसे आगे ले जाने का काम कम कठिन नहीं था। लेकिन देश ने उस समय यह साफ-साफ देखा कि उसे संभालने की ताकत शास्त्री जी में ही है और शास्त्री जी ने अपने निर्मल चरित्र और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा देश की इस आकांक्षा को पूरा किया।

शास्त्री जी को एक सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि “वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचे, तब भी वह सामान्य ही रहे रहे!” विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विशिष्ट प्रकार का आकर्षण पैदा करते थे। इस दृष्टि से शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और कहना न होगा
कि बापू से प्रभावित होकर ही सन् 1921 में उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ी थी। शास्त्री जी पर भारतीय चिंतकों, डॉ. भगवानदास तथा बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवन-भर उन्हें आदर्शों पर चलते रहे तथा औरों को इसके लिए प्रेरित करते रहे। शास्त्री जी के संबंध में मुझे बाबुबल की वह उक्ति विलकुल सही जान पड़ती है कि विनम्र ही पृथ्वी के वारिस होंगे।

शास्त्री जी ने हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम में तब प्रवेश किया था, जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र 17 वर्ष की थी। गाँधीजी के आहवान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे। इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आजादी और सामाजिक कार्यों की ओर लगा रहा। परिणाम यह छुआ कि सन् 1926 में वे ‘लोकसेवा मंडल’ में शामिल हो गए, जिसके वे जीवन-भर सदस्य रहे। इससे शामिल होने के बाद से शास्त्री जी ने गाँधी जी के विचारों के अनुरूप अनूठों और अलग वार्तालाप के काम में अपने आपको लगाया। वहाँ से शास्त्री जी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। सन् 1930 में जब ‘नमक कानून तोड़ो आंदोलन’ शुरू हुआ, तो शास्त्री जी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। वहाँ से शास्त्री जी की जेल यात्रा को जो शुरुआत हुई तो वह सन् 1942 के ‘भारत छोड़ो’ आंदोलन तक निरंतर चलती रही। इन 12 वर्षों के दौरान वे सात बार जेल गए। इसी से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आजादी के लिए कितनी बड़ी लतक थी। दूसरी जेल यात्रा उन्हें सन् 1932 में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी। सन् 1942 को उनकी जेल यात्रा 3 वर्ष की थी, जो सबसे लंबी जेल यात्रा थी।

इस दौरान शास्त्री जी जहाँ एक ओर गाँधी जी द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों में लगे रहे थे, वहाँ दूसरी ओर पदाधिकारी के रूप में जनसेवा के कार्यों में भी लगे रहे। सन् 1935 में वे संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए, इस पद पर वे 1938 तक रहे। किसानों के प्रति उनके मन में विशेष लगाव था। इसलिए उनको सन् 1936 में किसानों की दशा का अध्ययन करने की एक कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। पूरी लगाने के साथ काम करके उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें जमींदारी उन्मूलन पर विशेष जोर दिया।

हिन्दी
इसके बाद के 6 वर्षों तक वे इलाहाबाद की नगरपालिका से किसी-न-किसी रूप में जुड़े रहे। मैं सपन्त्र हूँ कि इस अनुभव ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व और चिंतन को नागरिकों की समस्याओं से निकट से परिचित कराया। उनके पास ग्रामीण जीवन का अनुभव था। अब इसके साथ ही इलाहाबाद नगरपालिका ने जनसेवा का भी अनुभव जोड़ दिया था। लोकतंत्र की इस आधारभूत इकाई में कार्य करने के कारण वे देश की छोटी-छोटी समस्याओं और उनके निराकरण की व्यावहारिक प्रक्रिया से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत करने का अद्वाय क्षमता के कारण सन् 1937 में वे संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के लिए निवाचित हुए। सही मानने में यहाँ से शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरुआत हुई, जिसका समापन देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने में हुआ। शास्त्री जी को भारतीय राजनीति की इतनी सही और गहरी पकड़ थी कि श्रीमती इंदिरा गाँधी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते हुए कहा था कि, “उन्हें मेरा मार्गदर्शन में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।”

देश की आजादी के बाद उत्तर प्रदेश तथा केन्द्र सरकार में शास्त्री जी भिन्न-भिन्न पदों पर रहे। उत्तर प्रदेश में उन्हें गृहमंत्री बनाया गया। बाद में पंडित नेहरू के अनुरोध पर वे केन्द्र में आ गए। केन्द्र में उन्होंने रेल और परिवहन, संचार, चाषियाँ, उद्योग और गृह जैसे महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों में मंत्री पद सँभाला। इन पदों पर रहते हुए शास्त्री जी ने अपनी जिस प्रशासकीय दक्षता का प्रमाण दिया, वह हमारे देश के लिए एक उदाहरण है। अपने मंत्रालयों के कार्यों में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक तथा सभी प्रकार की ओपरेशनिकताओं से परें होता था। वे अपने को कभी भी अपने पद के कारण ऊँचा नहीं मानते थे। उनकी बड़ी सीधी-सी धारणा थी कि वे जनता के शासक नहीं, बल्कि जनता के सेवक हैं। ऐसी भावना से कार्य करने के कारण उन्हें अपने मंत्रालय में तो लोकप्रियता मिली ही, साथ-ही-साथ यहीं देश में भी लोकप्रियता मिली। इसी लोकप्रियता का परिणाम था कि पंडित नेहरू के निधन के बाद देश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार किया। देश के इस महत्त्वपूर्ण पद पर रहते हुए केवल 19 महीनों के छोटे-से-समय में उन्होंने जितनी सफलताएं और लोकप्रियता प्राप्त की, वह एक उदाहरण है। शास्त्री जी के सामने अपना उदेश्य बिलकुल स्पष्ट था। उसमें किसी प्रकार का धुंधलापन या भटकाव नहीं था।

वे हमारे देश के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और इन पदों पर रहते हुए स्वाभाविक रूप से वे अधिकार संपन्न भी थे। लेकिन उन्होंने हमेशा आत्मसंयम से काम लिया तथा अधिकारों से अधिक कर्तव्यों को तर्कीब दिया। शायद इसीलिए शास्त्री जी इसने अधिक लोकप्रिय भी हो सके। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षात-समारोह में 19 दिसम्बर, 1964 को छात्रों को संबोधित करते हुए कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे, “आपके भविष्य की मंजिल चाहें जो कुछ भी हो, आप में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि आप सबसे पहले देश के नागरिक हैं। यह आपको संविधान द्वारा प्रदत्त कुछ अधिकार देता है, लेकिन इसलिए कुछ कर्त्तव्यों का भी बोझ आता है, जिसे समझना चाहिए। हमारा
शब्दार्थ

देश प्रजातात्त्विक है, जो निजी स्वतंत्रता देता है, लेकिन इस स्वतंत्रता का उपयोग एक व्यवस्थित समाज के हित में स्वेच्छा से लगाए गए प्रतिबंधों के तहत होना चाहिए।” अधिकार, कर्त्तव्य और आत्मसंयम के बारे में यह अल्पतंत्र महत्वपूर्ण बात शास्त्री जी ने कही थी, जिसे आज याद रखने की जरूरत है।

अभ्यास

प्रश्न 1. (अ) कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) “शास्त्री जी को निष्काम कर्मयोगी कहना अधिक उचित है।”
(2) “शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था।”
(3) “शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है।”

प्रश्न 2. अगर महात्मा गांधी आपके स्वभाव में आये तो आप उनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे? और महात्मा गांधी क्या-क्या उत्तर देंगे? सोचिए और बताइए।

प्रश्न 3. संवाद को आगे बढ़ाइए (जिसमें कम से कम आठ से दस प्रश्न और जवाब हों) :

रिया : गांधी जी का जन्म कब हुआ था?
सुनील : गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में हुआ था।
रिया : गांधी जी ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?
सुनील : गांधी जी ने इंग्लैंड से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।
रिया : ...

प्रश्न 4. निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से अनुलेखन कीजिए :

कोलकाट में हमारा घर एक शांत जगह पर है। हमारे बगीचे की दीवार के उस तरफ एक संकीर्ण सड़क है। यह संकीर्ण सड़क बन प्रांत पर जाकर खत्म होती है। इस सड़क के दोनों ओर मकान हैं और अधिक यातायात न होने से यह बहुत ही शांत रहती है। सारे दिन इसके आसपास गिलहरियाँ एक-दूसरे का पीछा करती हैं। हमारे आस-पास के पेड़ों पर अनेक पक्षी के पक्षी दिखाई पड़ते हैं। सारा दिन हवा में पक्षियों का संगीत तैरता रहता है।

हिंदी
प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(1) शास्त्री जी ने देश की किस आकांक्षा को पूरा किया? कैसे?
(2) लालबहादूर शास्त्री पर गाँधी जी के आदर्शों का क्या प्रभाव पड़ा?
(3) शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरुआत कैसे हुई?
(4) छात्रों के दीक्षात असमर्थ में शास्त्री जी ने कौन-से विचार व्यक्त किए?

प्रश्न 2. परिच्छेद में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में से दूरूदर उन्हें शब्दकोश के क्रम में लिखिए:

बिद्यार्थी जीवन की मानव जीवन की रीढ़ की हड़ड़ी कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। विद्यार्थी काल में मानव में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अभिनंदन रहते हैं। इसीलिए यही काल आधारीत भाव गया है। यदि यह नीचे ढूँढ़ बन जाता है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कह सहन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है, जिस दृष्टि को प्रारंभ से सुंदर सिखन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पतलवित होकर संसार को सौभाग्य देने लगता है। इस प्रकार बिद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, संयम एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है।

प्रश्न 3. इस इकाई से हम लालबहादूर जी के जीवन में से कौन-कौन से सदृश प्रहन कर सकते हैं?

प्रश्न 4. एक था शेर। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। जंगल के प्राणियों ने उनको सबक सिखाने की बात सोची। छोटी चीटी बोली, ‘‘मैं शेर का घमंड उतारा दूँगी।’’

अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाए और बताए कि चीटी ने शेर का घमंड कैसे उतारा होगा?

भाषा-सज्जता

हम इससे पहले अच्छे के बारे में समझ चुके हैं, अब इनके भेद के बारे में समझेंगे।

• निम्नलिखित वाक्य पढ़ें:
  - भावेश क्रम बोलता है।
  - साहित्य झट-पट तैयार हो गया।
  - साहित्य प्रतिदिन कार्यालय जाती है।
  - बंदना भीतर बैठी थी।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्द अपने साथ आए क्रियापदों की विशेषता प्रकट कर रहे हैं।

‘क्रम’ शब्द क्रिया का परिमाण (मात्रा), ‘झट-पट’ शब्द क्रिया की तीति, ‘प्रतिदिन’ शब्द क्रिया के काल और ‘भीतर’ शब्द क्रिया के स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं। अर्थात् वे ‘क्रियाविशेषण अव्यय’ है।
निम्नलिखित वाक्य पढ़ें:
- राम के साथ लक्ष्मण भी चन में गए।
- बगीचे के चारों ओर दीवार बनी हुई है।
- हमारे घर के आगे मस्जिद है।
- मनोज भानसी से मधुर गाती है।
- आज साजिद की जगह वाजिद खेलेगा।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो जाता है कि -
- ये सभी किसी न किसी संज्ञा के बाद प्रयुक्त हुए हैं।
- ये वाक्य में आए अन्य संज्ञा शब्दों से संबंध का बोध कर रहे हैं।

जैसे -
- ‘के साथ’ : ‘राम’ और ‘लक्ष्मण’ का
- ‘के चारों ओर’ : ‘बगीचे’ और ‘दीवार’ का
- ‘के आगे’ : ‘घर’ और ‘मस्जिद’ का
- ‘से मधुर’ : ‘मनोज’ और ‘भानसी’ का
- ‘की जगह’ : ‘साजिद’ और ‘वाजिद’ का

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त किए जाते हैं तथा अन्य संज्ञा, सर्वनाम या अन्य शब्दों के साथ संबंध का बोध करते हैं वे अन्य संबंधवृद्धि अव्यय’ हैं।

निम्नलिखित वाक्य पढ़ें:
- तुरोदिन, संज्ञा और निलेश गांधीनगर गए।
- रमेश ने परिश्रम किया इसीलिए प्रभुम आया।
- यदद्वारे वह निर्धन है, तथापि उदार है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों या दो वाक्यांशों को जोड़ने का काम कर रहे हैं।

दो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा शब्दों को परस्पर मिलाने-वाले शब्द को ‘समुच्चयवृद्धि अव्यय’ कहा जाता है। जैसे : और, तथा, किंतु, अथवा, इसीलिए आदि।
निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए:

- अरे! क्या बात करते हो।
- हाय! ये क्या हो गया?
- चाह! कितना सुंदर बालक।
- उड़र! आगे मत बढ़।
- बाप रे! झटका लम्बा सौंप।

उपयुक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द शोक, विस्मय, हर्ष, क्रोध, भय आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं।

जो शब्द विस्मय (आशर्चर्य), हर्ष, प्रर्शंसा, चूडा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने के लिए हमारे मुख से स्वतः निकल पड़ते हैं, वे ‘विस्मयादिबोधक अव्यय’ कहे जाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय-छाँटिए:

- आज मैंने बहुत कम खाना खाया।
- अंजली, सोनल के आगे बैठी है।
- मैनास्ती और सालवी गाँव जा रही हैं।
- अरे! ये क्या कर रहे हो?

आपने जो ‘अव्यय’ छाँटे हैं, उनका प्रयोग करके अन्य वाक्य बनाइए।

योग्यता विस्तार

- ‘मेरा प्रिय नेता’ विषय पर निबंध लिखिए।
- राष्ट्रीय नेताओं के चित्र चार्ट पर चिपकाइए।
- ऐसे डाक टिकटों का संग्रह कीजिए जिनमें राष्ट्रीय नेता के चित्र हों।
- किसी राष्ट्रीय नेता के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाइए।
- ‘नमक सत्याग्रह’ और ‘हिन्दी छोड़ो’ आंदोलन के बारे में संचित जानकारी प्राप्त कीजिए।
- महापुरुष और उनके नारों की सूची बनाइए।
निम्नांकित कोष्ठक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दस अमर क्रांतिकारियों के नाम छिपे हैं। यदि आप अपनी बुद्धि से रिक्त स्थानों में सही अक्षर भर सकें, तो वे नाम स्पष्ट हो जाएँगे। जरा उठाए अपनी कलम और इस्तेमाल कीजिए अपनी बुद्धि का।

![Crossword Puzzle](image)
नस्त कबीर १५वीं शताब्दी के कवि हैं। आपने हिंदू और मुसल्मानों को उनकी गलतियों के लिए फटकाया है और दोनों को हिल-मिलकर रहने का उपदेश दिया है।

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख्वानखाना है। आप बड़े उदार और अनुभवी थे। हिंदी में आपने बोधिप्रद दोहे लिखे हैं।

नस्त तुलसीदास १६वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रामभक्त कवि हैं। आपने ‘रामचरित मानस’ नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा है।

कबीर

(1) साँई हतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
   में भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।
(2) बिना विचारे ने करे, सो खाओ पछताय।
   कम बिगाड़े आपनों, जग में होत हैंसाव।
(3) कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सब को ख़ेर।
   ना काहू से दोसती, ना काहू से बैर।

रहीम

(1) रहीमन वे नर वर छुके, जे कहूँ माँगन जाहिं।
   उनके पहिले वे मुपे, जिन मुख निकसत नाहिं।
(2) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
   चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।
(3) बड़े बड़ें ना करें, बड़े न बोलो बोल।
   रहीमन हीरा कब कहैं, लाख टका मेरो मोल।
(1) आवत हिय हरखे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी बहाँ न जाई, कंचन बरसे मेघ॥

(2) चिझा धन उद्यम बिना, कहाँ जू पावे कौन।
बिना दुलाये न मिले, ज्यों पंखा को पीन॥

शब्दार्थ
कुदम कुद्रं, परिवार खैर कुशल नाद आवाज़, ध्वनि कुसंग बुरी संगत भुजंग साँप, सर्प नैनन आँखों में हरखे खुशी कंचन सोना मेह मेघ उद्यम परिश्रम पीन, पवन, हवा खानखाना सरदारों का सरदार, एक उपाधि

अभ्यास
प्रश्न 1. शिक्षक की सहायता से ‘दोहों’ का भावपूर्ण गान कीजिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताकर उनका उपयोग कीजिए:
उद्यम, प्रकृति, खैर, कुसंग, कंचन, जपमाला, दुःख, भुजंग, हरखे

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
(1) यदि भगवान आपको कुछ मांगने के लिए कहे, तो आप क्या मांगना चाहेंगे?
(2) अच्छे व्यक्ति की संगति से आपको क्या लाभ हो सकते हैं?
(3) लोग धर्म के नाम पर कौन-से आड़म्बर करते हैं?
(4) लोग किन-किन कारणों से भीख मांगते हैं?

स्वाध्याय
प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए:
(1) कबीर साँई से कितना मांगते हैं?
(2) बिना साँँचे कार्य करने से क्या होता है?
(3) चंदन और भुजंग के उदाहरण द्वारा रहीम क्या कहते हैं?
(4) रहीम बड़े लोगों की क्या विशेषता बताते हैं?
(5) तुलसीदास किसके घर नहीं जाना चाहते?

प्रश्न 2. इस इकाई के दोहों में से आप कौन-से सदृश प्रणाली चुनें?
प्रश्न 3. निम्नलिखित जवाब मिले ऐसी पहेलियों का निर्माण कीजिए:

(1) तोता (2) पतंग (3) चिड़िया

योग्यता विस्तार

- विद्यालय की बालसभा में उक्त कवियों के दोहों पर आधारित ‘बाल कवि दर्शार’ प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
- इन कवियों के जीवन से जुड़े रोचक / प्रेरक प्रश्नों को सुनाइए।
- इन कवियों के अन्य दोहों का अनुवाद कीजिए।
- इन कवियों की अन्य रचनाओं के बारे में जानिए।
पुनरावर्तन-1

प्रश्न 1. अपने मित्र को निबंधलेखन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए।
प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन करके उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए:

<table>
<thead>
<tr>
<th>शब्द</th>
<th>वाक्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>दास</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>धोबी</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>स्वामी</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>विद्वान</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>बाबू</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>बूढ़ा</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>शेर</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>पंडित</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>भैंस</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>लेखक</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
<tr>
<td>वाक्य</td>
<td>...........................................................................................................</td>
</tr>
</tbody>
</table>
प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन करके उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए:

(1) गम्भीर
   वाक्य : ........................................................................................................

(2) माला
   वाक्य : ........................................................................................................

(3) कहानी
   वाक्य : ........................................................................................................

(4) तिथि
   वाक्य : ........................................................................................................

(5) विचित्र
   वाक्य : ........................................................................................................

(6) चूड़ी
   वाक्य : ........................................................................................................

(7) सहेली
   वाक्य : ........................................................................................................

(8) सेना
   वाक्य : ........................................................................................................

(9) चीज़ा
   वाक्य : ........................................................................................................

(10) वस्तु
    वाक्य : ........................................................................................................

प्रश्न 4. निम्नलिखित इकाईयों को पढ़कर उनसे से आपको जीवन में उतारने जैसी कौन-कौन-सी बातें अच्छी लगाएं? उनकी सूची तैयार कीजिए।

- इकाई 4 : कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री
- इकाई 3 : मत बाँटो इंसान को
- कुछ यथार्थ नेताओं के जीवन और कार्य के चरण में जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करके हस्तालिखित अंक तैयार कीजिए।

♦
टूफानों की ओर

5 अगस्त, 1915 को ग्राम झागपुर, जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश में।
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., पीएच.डी।
अनेक अध्ययन संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा हिंदी संस्थान में उच्चतम पदों पर कार्य किया
तथा अनेक देशों की यात्रा की।
1974 में 'भिट्टो की बारात' पर साहित्य अकादमी तथा 1993 में भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित। 1974
में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित।
हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मोह, प्रत्य-सुनन, विश्व बदलता ही गया, विश्व दिमालय, भिट्टो की बारात,
वाणी की यथा, कटे अंधों की बंडनवारें।
उदास और विकास, प्रकृति पुरुष कालियास।
प्रसिद्ध कविता में कवि जिविनगर सिंह 'सुनन' ने सदा संघर्षमय रहकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी है। जिस तरह
आग में रहकर सीना निखरता है, उसी तरह जायसे हमें जीने की नई राह दिखाती हैं तथा आगे बढ़ने के लिए, हमारे इरादों को मजबूत
बनाती हैं।
इस कविता में भ्यर, गतिशीलता, साहस और संघर्षमंत्र रहता जैसे मूल्य उजागर किए गए हैं।

टूफानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पत्तार।
आज सिंधु ने विष उगाला है;
लहरों का यौवन मचला है;
आज हदद में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
टूफानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पत्तार।

लहरों के स्वर कुछ बोलो,
इस अंधकार में साहस तोलो।
कभी-कभी मिलता जीवन में
टूफानों का प्यार।
टूफानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पत्तार।

हिंदी
यह असीम, निज सीमा जाने,
सागर भी तो यह पहचाने।
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।
तूफानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

सागर की अपनी क्षमता है,
पर माँझी भी कब थकता है,
जब तक साँसों में स्पंदन है,
उसका हाथ नहीं रुकता है,
इसके ही बल पर कर डाले
सातों सागर पार।
तूफानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

शब्दार्थ

नाविक नाव चलाने वाला, मकान, माँझी निज अपना पतवार नाव चलाने वाली लड़की, चप्पू ज्वार तूफान (समुद्र में पानी का बढ़ना) अंध्र अँगी असीम सीमाहीन (जिसकी कोई सीमा न हो) क्षमता शक्ति, योग्यता स्पंदन चेतना, धड़कन बल पर सहारे

अभ्यास

प्रश्न 1. शुद्ध उच्चारण कीजिए:

तूफान, सिंधु, चीवन, हदय, अंध्र, मिट्टी, स्पंदन

प्रश्न 2. ‘तूफानों की ओर...’ इस काव्य का समूहगान कीजिए।

प्रश्न 3. प्रश्नों के पौराक उत्तर दीजिए:

1. “तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार” ऐसा कवि ने क्यों कहा है?
2. “सागर भी तो यह पहचाने” में क्या पहचान ने की बात कही गई है?
3. समस्या आने पर हमें क्या करना चाहिए?
4. “इस अंध्र में साहस तोलो” का क्या अर्थ है?
प्रश्न 4. कविता को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

किताबें कुछ कहना चाहती हैं...

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
kिताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।
kिताबों में झरने गुनगुनाते हैं।
परियों के किससे सुनाती हैं।
kिताबों में रोबोट का राज है।
kिताबों में साईंस की आवाज है।
kिताबों का कितना बड़ा संसार है।
kिताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में

(1) प्रश्न के उचित विकल्प पर ☑ का निशान लगाइए:

(क) किताबों में कौन चहचहाता है?

तोता ☑, मोर ☑, चिड़ियाँ ☑

(ख) किताबें किसके किससे सुनाती हैं?

राजा ☑, परियाँ ☑, किसान ☑

(ग) किताबों में किसके लहलहाने की बात है?

खेतियाँ ☑, झरने ☑, बाग ☑

(2) नीचे दिए हुए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:

परियों, किसान, संसार, भरमार

(3) प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) किताबों में क्या-क्या है?

(ख) हमें किताबें क्यों पढ़नी चाहिए?

(ग) “किताबों में ज्ञान की भरमार है।” ऐसा कवि ने क्यों कहा है?

(घ) इस काव्य का उचित शीर्षक दीजिए।
प्रश्न 5. चित्र देखकर नीचे दिए गए शब्दों की मदद से छोटी-सी कहानी बनाकर अपने वर्ग में सुनाइए:

सुबह, घर, भेंजा, खिलोनेवाला, ढेर सारे, बच्चे, जगाना, खरीदा, खुश, मुर्गा, रात, बक्सा, बांग

प्रश्न 6. आपके गाँव में बाड़ आए तब उस समय आप क्या करेंगे? गाँव छोड़कर चले जाओगे या गाँववालों की मदद करेंगे? अपने विचार कारण सहित बताइए।

प्रश्न 7. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के विशेषण बनाए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए:

1. उनकी ईमानदारी से सारा नगर परिचित है।
2. हमारी अमीरी लोगों को उपयोगी होगी।
3. हिमालय पर्वत की ऊँचाई देखने लायक है।
4. लक्ष्मीबाई चीरता पूर्ण लड़ी।
5. दूसरों की बुराई करना पाप है।

प्रश्न 8. कहावतों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:

1. उलटा चोर कोलवाल को डाँट।
2. न रहेगा बांस, न बजेगी बाँसूरी।
3. चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।
4. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुंग गई खेत।

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. कवि ने मनुष्य की किस विशेषता की ओर इशारा किया है?
2. ज्वार कहाँ-कहाँ उठा है?
(3) समुद्र ने कैसा रूप धारण किया है?
(4) कवि ने मनुष्य को मिट्टी का पुतला क्यों कहा है?
(5) माँझ का हाथ कब तक नहीं रुकता है?

प्रश्न 2. इस कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

- इस कविता में कवि ने मनुष्य को संघर्ष से विमुख न होकर जीवन संग्राम में जुड़े रहने की प्रेरणा दी है। इसी विचारधारा के आधार पर अपने कक्षाक्रम में बातचीत कीजिए।
- कक्षाक्रम में कुछ ऐसी कविताओं को सुनाइए, जिनमें परिप्रेक्ष्य, ध्वेष और सहयोग तथा प्रसन्न रहने की बात कहीं गई हो।
- अपने जीवन में ऐसी स्थिति आई हो जिसमें आपको बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा हो। अपने अपनी मुश्किल कैसे हल की? लिखिए।

हिन्दी
माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आंदोल आता है, वही आंदोल बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवान्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बहुत ही सुंदर और बलवान था। इसके घोड़ा का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे ‘सुलतान’ कहकर पुकारते, अपने हाथ से खेरहर करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रूपया, माल अस्स, जमीन आदि अपना सब कुछ चोड़ दिया था। यहाँ तक कि उन्हें नागर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव के बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। “मं सुलतान के बिना नहीं रह सकता” उन्हें ऐसा लगने लगा था। वे उसकी चाल पर लटके थे। कहते, ऐसे चलता है, जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या के समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चौंच न आता।

खड़गसिंह उस इलाके का कुख्यात दाकू था। लोग उसका नाम सुनकर कोपें थे। होते-होते सुलतान की कीमत उसके कानों तक भी फूँटें। उसका हदय उसे देखने के लिए अर्धी हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, “खड़गसिंह, क्या हाल है?”
खड़गसिंह ने बयां बुकाकर उत्तर दिया, “आपकी दया है।”
“कहो, इसके बाबा आ गए?”
“सुलतान को चाह खूँच लाई।”
“चिंचन्त्रा जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।’’
“मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।”
“उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।”
“कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।”
“क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हद तक उसकी छवि अंकित हो जाती है।”
“बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।”

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया चमड़े से, खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आरंभ से। उसने सहस्रों घोड़ों देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से कभी लाभ?
कुछ देर तक आरंभ से खड़ग रहा। इसके पश्चात उसके हद में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अर्धीरता से बोला, “परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या!”

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हद अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायुमें उड़ने लगा। घोड़े की चाल देखकर उसके हद पर साँप लोट गया। वह ढाकूँ था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझने लगता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, “बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।”

बाबा भारती दर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में करने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का डर लगा रहता था परंतु कई महीने बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए।
संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सबार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और वह मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई - “ओ बाबा! इस कॉँगले की सुनते जाना।”

आवाज में कहना थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, “क्या, तुझे क्या कष्ट है?”

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा - “बाबा, मैं दुःखियार हूँ। मुझ पर दया करो। रामावला यहाँ से तीन मील है। मुझे जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।”

“वहाँ तुम्हारा कौन है?”

“दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सीतेला भाई हूँ।”

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलते लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज अब खड़े खड़गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक तो चुप रहे। इसके पश्चात कुछ निश्चय कर पूरे चल से चिल्लाकर बोले - “जाना उहर जाओ!”

खड़गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया। उसकी गरदन पर घास से हाथ फेरते हुए कहा - “बाबा जी, यह घोड़ा अब न हूँगा।”
“मगर एक बात सुनते जाओ।”

खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखें से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है। फिर कहा - “यह घोड़ा तुझसे हो चुका है। मैं तुमसे इस वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।”

“बाबा जी, आज़ाद करिजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न कहूँगा।”

“अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्राप्त न करना।”

खड़गसिंह का मुँह आँखें से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा - “इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।”

इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के चेहरे पर गड़ा दीं और पूछा - “बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है?”

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया - “लोगों को अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास न करेंगे।” यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, पवित्र भाव हैं। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की नई खिल जाता था। कहते थे - “इसके बिना मैं न रह सकूँगा।” इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़े दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देखता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सनाता था। आकाश में ठोस निमित्त मरे थे। घोड़ों के दूर पर गाँवों के कुत्ते भींकर रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तमल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाकर का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके श्वान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर साधुदानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा फहर बीत चुका था। चौथा फहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल उठके जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वच्छ ने चल रहा हो, उनके पाँव अस्तमल को ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का बना दिया। वे वहाँ रहे गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिन्हिनाया।
अब बाबा भारती आशर्च्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर चुपसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, मानो कोई पिता बहुत दिन के बिल्ले हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकिम्मा देते।
फिर वे संतोष से बोले - “अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।”

शब्दार्थ

कहणा द्वारा कीति यह प्रशंसा तारीफ़ विचित्र अनोखा अधीर बैचेन, उतावला सहसर अचानक कंगाल निर्धन नेकी भलाई कुख्यात बदनाम चाप पग ध्वनि घृणा नफरत अभिलाषा इच्छा छवि चित्र, तस्वीर वायुयुग हवा की गति प्रतिक्रिया हर पल विस्मय आशर्च्य प्रयोजन उदेश खंडन कंगाल कंगाल, निर्धन अपाहिज विकलांग बाँका सुंदर और बहादुर असवाप वसू, सामान अस्तबल तबेला, चुड़ासाल खंडन चह कंगी या तुरुस्स जिससे घोड़े के रोए साफ किए जाते हैं बाग घोड़े की लगाम

पुष्टि

लदटू होना मोहित होना फूला न समाना अति प्रसन्न होना आँख नीची होना लजित होना फूट-फूट कर रोना बहुत रोना साप लोटना ईंधन होना सिर मारना अत्यधिक मानसिक परिश्रम करना

भाषाः

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
(1) खड़गसिंह का हदय परिवर्तन क्यों हुआ?
(2) “अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।” बाबा भारती ने ऐसा क्यों कहा?
(3) यदि बाबा भारती को जगह आप होते तो क्या करते?
(4) “इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।” ऐसा बाबा भारती ने क्यों कहा?

प्रश्न 2. मान लो आपके गाँव की बैंक में लूट हुई। लूट किस गलती के कारण हुई होगी? लूटेरे कौन हो सकते हैं? इस घटना का अनुमान लगाएँ और लूट या चोरी से बचने के लिए क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिए? अपने दोस्तों के साथ चर्चा कीजिए।

प्रश्न 3. परिच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
सोना अचानक आई थी, परंतु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पाय नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग का, रोशनी लच्छे की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था, छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी चमड़ी बाँधी थी। देखकर तो लगता था कि अभी छलक पड़ेगी। लंबे कान, पतली सुधीर टॉंगे, जिन्हें देखकर हर प्रभुत्व गति की बिजली की तरह देखनेवालों को आँखों में बौंध जाती थी। सब उसके सार, शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्ण रूपसी के लिए उपयुक्त सोना, सुवर्ण आदि नाम उसका परिचय बन गए।
पत्रं उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिससे मनुष्य निषुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निघुंर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अर्थपरिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी। प्रशांत कथाली में जब अलस भाव से धंधन करता हुआ मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सदृश: प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सदृश: जात मृग शिशू तो भाग नहीं सकता था। अतः मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने सरिर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में अपने प्राण दिए।

शब्दार्थ

लच्चा गुच्छा शावक हरिए का बच्चा सदृश: प्रसूता हाल या तत्काल व्याख्या हुई सदृश: जाता तुलना जन्मा हुआ

(1) सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए :
   (क) सोनाहरिए का रंग कैसा था?
       लाल [ ] पीला [ ] सुनहरा [ ]
   (ख) मृग-समूह किसको आहट से चौंक कर भागा?
       पताखों की [ ] शिकारियों की [ ] बादल की [ ]

(2) रिक्त स्थान भरिए :
   (क) सोना अब तक अपनी .................................................. भी पार नहीं कर सकी थी।
   (ख) हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी .................................................. है, जिसे मनुष्य की निघुरता गढ़ती है।

(3) इन शब्दों के अर्थ लिखिए :
   आहट - .................................................. शैशववास्था - ..................................................

(4) इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :
   लघु - .................................................. मानव - ..................................................

(5) हरिण-शावक सोना की शारीरिक बनावट कैसी थी?

प्रश्न 4. एक दिन बादशाह अकबर ने अपने दरबारियों से पूछा, “बताओ दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है?” दरबारियों का जवाब क्या होगा और बीरबल ने क्या कहा होगा?
   कहानी आगे बढ़ाएः

स्वाभावधार

प्रश्न 1. दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए :
   (1) खड़गसिंह उस इलाके का ................................... डाकू था। (प्रसिद्ध, कुछात)
   (2) अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरों के मुख से सुनने के लिए उनका हदय .................................. हो गया था। (धीर, अधीर)
(3) “बाबा जी, आपका कोई कैरीज़। मैं आपका ................. हूँ, केवल यह घोड़ा न दूंगा।”
(दास, स्वामी)

प्रश्न 2. किसने, किससे कहा?
(1) “दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौंतेला भाई हूँ।”
   - अपार्ज ने बाबा भारती से
   - बाबा भारती ने अपार्ज से
(2) “लोगों का अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास
   न करेंगे।”
   - बाबा भारती ने खड़गसिंह से
   - खड़गसिंह ने बाबा भारती से

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में लिखिए:
(1) खड़गसिंह बाबा भारती के पास क्यों आया?
(2) बाबा भारती किस बात से डर गए थे?
(3) सुलतान पर सवार खड़गसिंह ने बाबा भारती से क्या कहा?

प्रश्न 4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए:
(1) बाबा भारती अपना समय कैसे बिताते थे?
(2) बाबा भारती को किसका डर लगने लगा? क्यों?
(3) खड़गसिंह ने सुलतान को कैसे प्राप्त किया?
(4) घोड़े को वापस आया देखकर बाबा भारती ने घोड़े से कैसा वर्तन किया?

प्रश्न 5. टिप्पणी लिखिए:
बाबा भारती की महानता

प्रश्न 6. दिए गए शब्दों के अर्थ से शब्द-पहली पूर्ण कौशिक़:

<table>
<thead>
<tr>
<th>खड़ा ↓</th>
<th>आड़ा →</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>(1) इच्छा</td>
<td>(1) वेचैन</td>
</tr>
<tr>
<td>(2) उद्देश्य</td>
<td>(2) बड़ई</td>
</tr>
<tr>
<td>(3) अचानक</td>
<td>(3) सत्य</td>
</tr>
<tr>
<td>(4) दया</td>
<td>(4) नभ</td>
</tr>
<tr>
<td>(5) नफरत</td>
<td>(5) घृं</td>
</tr>
</tbody>
</table>

44 हार की जीत
प्रश्न 7. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए:
(सुंदर, जमीन, संध्या, गरीब, विश्वास)

प्रश्न 8. दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए:
(प्रति, निर)

1. ............ + दिन = ............
2. ............ + आधार = ............
3. ............ + मूल = ............
4. ............ + खूल = ............
5. ............ + जल = ............
6. ............ + दोष = ............

प्रश्न 9. दिए गए शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए:
(इक, लं)

1. मुख + ............ = ............
2. मनुष्य + ............ = ............
3. भूत + ............ = ............
4. मम + ............ = ............
5. समाज + ............ = ............
6. सम + ............ = ............

प्रश्न 10. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण पहचानकर उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग कीजिए:
(जैसे - खड़गसिंह इस इलाके का कुख्यात डाकू था।)

विशेषण: कुख्यात
वाक्य: कुख्यात आदमी से लोग डरते हैं।

1. कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।
2. परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़ार था।
3. बाबा भारती ने ठंडे जल से स्नान किया।
4. अपने प्यारे घोड़े से लिपटकर रोने लगे।
5. बाबा भारती प्रसिद्ध साधु थे।

योग्यता विस्तार
- इस कहानी को एकांकी के रूप में लिखकर प्रारंभिक संस्कृत में मंचन कीजिए।
- साधु, डाकू, अपाहिज और घोड़े के मुख्तार अपनी क़क़ा में शिक्षक की सहायता से बनाइए।
- आपके विस्तार में कोई संत पुरुष या प्रेरणादायी व्यक्ति हों, तो उनके बारे में लिखिए।

हिंदी
हँसना मना है।

चुटकूले हास्य एवं व्यंग्य विवेचन का एक सशक्त माध्यम है। चुटकूले का प्रमुख गुण यह होता है कि उनका स्वरूप छोटा और संवाद छोटे-छोटे होते हैं। चुटकूले पढ़ने और सुनने से हमारा तनाव दूर होता है। इस दृष्टि से चुटकूले तनाव दूर करने का सशक्त माध्यम है।

(1) चुहा हाथी के पास गया और बोला, "हाथी दादा, हाथी दादा। क्या आप मुझे आपकी लूंगी दो दिन के लिए दोगे?"
हाथी: तुम उसका क्या करोगे?
चुहा: मेरे बेटे की शादी है, उसमें तंबू लगाना है।

(2) पता नहीं लोग महीनों बिना
नहाए कैसे रहते हैं?
मुझे तो 28 वें दिन ही
खुजली होने लगती है...

(3) ग्राहक – आपके पास टूथ ब्रश है?
दुकानदार – ब्रश नहीं है, पेस्ट है।
ग्राहक – अच्छा, आपके पास पाउडर होगा?
दुकानदार – पाउडर नहीं है, क्रीम है।
ग्राहक – क्रीम नहीं चाहिए। टॉर्च मिलेगी?
दुकानदार - वह तो कल ही खत्म हो गई। मोमबत्ती है।
ग्राहक - खैर ताला तो होना ही चाहिए।
दुकानदार - है, दूं?
ग्राहक - जी नहीं, उसे अपनी दुकान पर लगाकर आप घर पर आराम कीजिए।

(4)

(5) तीन दोस्त आपस में गप-शाप कर रहे थे। प्रसन हुआ कि किसी दिन सोकर उठने पर हमको यह पता चले कि हम लखपति बन गये हैं तो हम क्या करेंगे?
एक ने कहा - हम तो सीधे पैरिस जायेंगे और खूब मजे करेंगे।
दूसरे ने कहा - मैं किसी लाभप्रद कारोबार में रूपया लगाऊँगा।
तीसरा बोला - मैं तो फिर सोने की कोशिश करेंगा और तब तक सोता रहूँगा जब तक करोड़पति न बन जाएँ।

(6)
(7) प्रश्न - रेल किराया इतना अधिक बढ़ जाने पर भी यात्रियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसका कारण बताइए।
उत्तर - इसका कारण यह है कि हर एक आदमी यही सोचता है कि अगले साल किराया और बढ़ जाएगा इसलिए अभी यात्रा कर ली जाए।

(8) शिक्षक ने सभी छात्रों को घास खाती हुई गाय का चित्र बनाने को कहा। सभी छात्र चित्र बना रहे थे, कल्पेश ने अपना पना कोरा छोड़ दिया।
शिक्षक - कल्पेश, इस चित्र में घास कहाँ है?
कल्पेश - घास को तो गाय खा गई।
शिक्षक - अच्छा, तो गाय कहाँ है?
कल्पेश - वह तो घास खाकर चली गई।

(9) 

प्रश्न 1. हर एक छात्र को कक्षा में पनपसंद चुटकुला सुनाने का मौका दीजिए।
प्रश्न 2. कोई ऐसा प्रश्न सुनाईए जब आप खूब हंसे हों।
प्रश्न 3. पाँच चुटकुले बनाकर सुनाइए।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. मातृभाषा में अनुवाद कीजिए:
(1) एक साहब टैक्सी में बैठे और ड्राइवर से बोले - जरा तेज़ चलो चारा मेरा चित्रहार निकल जाएगा।
ड्राइवर बोला - अगर मैं ज्यादा तेज़ चला तो कहाँ ऐसा न हो कि आपके और मेरे चित्रों पर हार चढ़ जाए।
(2) शिक्षक मोहन से - मोहन, ताजमहल कहाँ पर है?
मोहन ने कुछ उत्तर नहीं दिया सो शिक्षक ने उसे बेंच पर खड़ा कर दिया। मोहन बेंच पर खड़े होकर, साहब यहाँ पर से भी नहीं दिखाई देता।

प्रश्न 2. राष्ट्रभाषा में अनुवाद कीजिए :
   (1) रमेश : आवी छिड़की करतां तो भोत साऊँ।
(अचानक घमंड आवी गया... अने बोल्या, तारो छव लेवा माटे मने आदेश मणेयो छे।)
रमेश : बो, बोलो...! हवे तो मागास मजाक पड़े नहीं करी शेड शू ?
(2) खिलेशभाई असमाज जिना रहीने मुसाकरी करी रक्षा करता। अेक भुसाकरे तेमने एसवा माटे ज्या करी आपी।
खिलेशभाई : मारे बेसवू नढी। मारे भूल उतावण छे।

प्रकल्प कार्य (Project work) : चुटकुला संग्रह
- दूरदर्शन / चैनल पर प्रसारित हो रहे हास्य कार्यक्रम को देखिए, जैसे-‘गम्मत गुलाल’, ‘तारक महेता का उलटा चरमा’ आदि।
- रेडियो पर प्रसारित चुटकुले / हास्य-प्रसंग / मजेदार कहानियाँ सुनिए।
- अखबार, पत्रिकाओं आदि में से कार्टून चित्र काटकर उनका संग्रह बनाए।
- व्याप्ति चित्रों को अपनी पाठशाला के बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित कीजिए।
- ‘हास्य दरबार’ कार्यक्रम का आयोजन कीजिए।
पहेलियों बुद्धिना एक का है; पहेलियों से छात्रों की तरकत तथा विचारशक्ति का विकास होता है। यहाँ पहेलियों के माध्यम से इस शक्ति का विकास करने का प्रयास किया गया है।

(1) एक पूल काले रंग का, सिर पर सदा सुहाता
तेज धूप वर्षा में खिलता, छाया में मुरझाता।

(2) चोर नहीं डाकू नहीं, नहीं कहीं कहीं की रानी
बर्तीस सिपाही घेरे रहते, तन-मन पानी-पानी

(3) नाम मेरा तीन अक्षर का, रहनेवाला सागर तट का
खाने में आता हूँ काम, बोलो बच्चो मेरा नाम।

(4) आदि कटे तो दराश चुत होता, मध्य कटे तो आम,
अंत कटे तो काउँ लकड़ी, बोलो मेरा नाम।

(5) दो सखियाँ दोनों चंचल, फिरती फाटक खोतें,
सो जाएँ तो सपने देखें, हँसे खुशी में, दुख में रो लें।

(6) दादा है पर दादी नहीं, भाई है पर बहन नहीं
बब है पर दस नहीं, रोजी है पर रोटी नहीं।

(7) दिए गए चित्रों में चित्र के शब्द ढूँढ़िए:
प्रश्न 1. दिए गए शब्द के उत्तर मिले ऐसी पहेलियाँ बनाइएः

(1) पेड़  
(2) आम  
(3) बारिश  
(4) हाथी  
(5) मोर  
(6) मोबाइल  
(7) बादल

प्रश्न 2. दिए गए चित्र में किन देशभक्तों की तस्वीरें उभरती हैं? - खोजिए और लिखिएः
प्रश्न 4. इस चित्र में ‘च’ से शुरू होनेवाली कितनी चीजें हैं?

मैंने ईंटों .................................................................

...........................................................................

‘च’ से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीजें हमसे छुट गई? उनके चित्र बनाए।
प्रश्न 1. इस चित्र में ‘म’ से शुरू होनेवाली कितनी चीजें हैं?

मैंने दूँढ़ी ........................................................................................................................................
.........................................................................................................................................................
‘म’ से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीजें हमसे छूट गई? उनके चित्र बनाए।

हिन्दी
योग्यता विस्तार

- शब्द पहेली की रचना कीजिए।
- ऐसा चित्र बनाए जिनमें प्राणी, पक्षी, फूल और यातायात के साधन आदि दिखाई देते हैं।
- निम्नलिखित शब्दचित्र देखिए और उनके नाम गुजराती और हिन्दी में लिखिए:
प्रश्न 1. निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से पठन और लेखन कीजिए:

अच्छी सोसाइटी यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और इससे आत्मसंस्कार होता है। सोसाइटी में सम्मिलित होने से हमारी समझ बढ़ती है, हमारी विवेकबुद्धि तीव्र होती है, हमारी सहानुभूति गहरी होती है, हमें अपनी शक्तियों के उपयोग का अभ्यास होता है। हम अपने साथियों के साथ मिलकर बढ़ाना सीखते हैं। इसी प्रकार हम दूसरों का ध्यान रखना उनके लिए कुछ स्वार्थ त्याग करना, सदृश्यों का आदर करना और सदाचार की प्रशंसा करना सीखते हैं। आत्मसंस्काराभिलापी युवक को उस चाल-व्यवहार की अवहेलना नहीं करनी चाहिए जो भले आदमियों के समाज में आवश्यक समझ जाता है।

प्रश्न 2. रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए:
एक कंजूस के पास काफी सोना - बक्से में भरकर खेत में गाड़ देना - रोज रात के समय गिनना - चोर का देख लेना - अशरफियों के बदले पत्थर भर देना - दूसरे दिन कंजूस का रोना - एक बूढ़े की सलाह, ‘अब पत्थर गिन लेना।’

प्रश्न 3. चित्र देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से चार-पाँच वाक्य लिखिए:
बच्चे, खुशा, खेल, चिड़ियाँ, डाली, मुस्कराते, सुंदर, खरगोश
प्रश्न 4. एक दिन निखिल के पिताजी कुछ काम से बाहर गए थे। वह अपनी माँ के साथ सोया हुआ था। आधी रात को जब उसकी नींद उड़ गई तो देखा घर में चोर घुसे हुए थे। तिजोरी से गहने चुरा रहे थे। कुछ देर सोचने के बाद निखिल को उपाय सूझा... (अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाएं)
स्व-अध्ययन

हमारे देश में असंख्य नदियाँ हैं। इनमें से बारह प्रमुख नदियाँ के नाम नीचे के चित्र में दिए हैं। वे नदियाँ मुख्यतः जिन प्रदेशों की भूमि सींचती हैं, उनके नाम हैं - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, बिहार, प. बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल।

झटपट बुद्धि लगाए और उन बारह नदियों के नाम खोजिए।

आपकी सुविधा के लिए इतना बता दें कि उन नदियों के नाम निम्नलिखित अक्षरों से शुरू होते हैं - ग, स, द, क, त, प, य और ब।
स्व-लेखन

- अपने क्षेत्र में पेड़-पौधों के अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।
स्व-लेखन

- पाठ्यपुस्तक में दिए गए दोहों के अलावा कबीर, रहीम और तुलसीदास जी के और तीन-तीन दोहे पुस्तकालय में जाकर खोजें और लिखें।
स्व-लेखन

- अख़्बार में पढ़े हुए या दूरदर्शन पर देखे-सुने हुए पाँच विज्ञानों के बारे में लिखिए।